

International Research Journal of Management Science & Technology



**ISSN 2250 – 1959(Online)
2348 – 9367 (Print)**

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJ MST.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

मिरतुर के प्राचीन ब्रह्मा मंदिर का पुरातात्विक एवं सांस्कृति अध्ययन: डॉ. राम विजय शर्मा के नवीन खोज के संदर्भ में

शोधकर्ता—डॉ. राम विजय शर्मा,

एम.ए. (इतिहास) – प्रथम श्रेणी, पी-एच.डी. (इतिहास), यू.जी.सी. नेट (इतिहास) छत्तीसगढ़ सेट (इतिहास) इतिहासकार, पुरातत्ववेत्ता एवं अंतर्राष्ट्रीय शोधकर्ता, रायपुर भारत



ब्रह्मा मंदिर

ग्राम—मिरतुर, तहसील—भैरमगढ़, जिला—बीजापुर (छत्तीसगढ़) भारत

खोजकर्ता—डॉ.

राम विजय शर्मा, इतिहासकार एवं पुरातत्ववेत्ता तथा तत्कालीन तहसीलदार भैरमगढ़

1. प्रस्तावना (Introduction)

भारतीय सनातन संस्कृति में त्रिमूर्ति (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) के अंतर्गत भगवान ब्रह्मा को सृष्टि का रचयिता माना गया है। संपूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप में भगवान ब्रह्मा के मंदिरों की संख्या अत्यंत विरल है, जिनमें राजस्थान का पुष्कर ब्रह्मा मंदिर सर्वाधिक प्रसिद्ध है। किंतु, मध्य भारत के छत्तीसगढ़ राज्य अंतर्गत जनजातीय बहुल बस्तर संभाग के बीजापुर जिले में स्थित मिरतुर ग्राम का ब्रह्मा मंदिर न केवल एक पुरातात्विक धरोहर है, बल्कि यह इस क्षेत्र में वैष्णव, शैव और ब्रह्म आस्था के दुर्लभ समन्वय को प्रदर्शित करता है। मिरतुर का ब्रह्मा मंदिर भारत का सबसे प्राचीन

ब्रह्मा मंदिर है क्योंकि मिरतुर ब्रह्मा मंदिर का निर्माण 11वीं-12वीं शताब्दी में छिंदक नागवंशी राजा द्वारा किया गया था जबकि पुष्कर का ब्रह्मा मंदिर 14वीं शताब्दी में निर्मित किया गया था। इस शोध पत्र में मंदिर के इतिहास, उसकी अद्वितीय 'दूध पात्र' (अभिषेक) परंपरा, पुरातात्विक अवशेषों और इसके सांस्कृतिक महत्व का व्यवस्थित अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

2. भौगोलिक अवस्थिति एवं क्षेत्र (Geographical Location)

यह ऐतिहासिक स्थल छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिले के अंतर्गत भैरमगढ़ तहसील के मिरतुर नामक ग्राम में स्थित है।

- अक्षांश-देशांतर क्षेत्र: यह राष्ट्रीय राजमार्ग 63 (NH-63) पर स्थित नेलसनार ग्राम से लगभग 16 किलोमीटर की आंतरिक दूरी पर स्थित है।
- प्राकृतिक विन्यास: यह क्षेत्र बस्तर के घने वनों, पहाड़ियों और इंद्रावती नदी घाटी के समीपवर्ती भूभाग से घिरा हुआ है, जो इसे प्राचीन काल में सुरक्षित और गुप्त साधना स्थली बनाता था।

3. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं काल-निर्धारण (Historical Background - Chronology)

बस्तर का इतिहास छिंदक नागवंशीय राजाओं (11वीं से 14वीं शताब्दी) और काकतीय राजवंश के काल से अत्यंत समृद्ध रहा है।

- निर्माण काल: पुरातात्विक साक्ष्यों और मूर्तिकला की शैली (Dravidian and Nagara mix) के आधार पर मिरतुर के इस मंदिर परिसर का निर्माण 12 वीं से 14वीं शताब्दी के मध्य (छिंदक नागवंश के स्वर्णकाल) में माना जाता है। इस काल में बारसूर और भैरमगढ़ के क्षेत्रों में विशाल मंदिर परिसरों का निर्माण कराया गया था।
- पतन एवं पुनरुद्धार: कालचक्र और बाह्य आक्रमणों या उपेक्षा के कारण मूल मंदिर संरचना ध्वस्त (धराशायी) हो गई थी। स्थानीय प्रशासनिक प्रयासों (पूर्व तहसीलदार डॉ. राम विजय शर्मा और ग्रामवासियों के सहयोग) से कुछ वर्ष पूर्व बिखरी हुई मूर्तियों को खोजा गया और एक विशाल बरगद के वृक्ष के नीचे चबूतरा निर्मित कर इन्हें सहेजकर पुनः स्थापित किया गया।

4. पुरातात्विक एवं मूर्तिकला विश्लेषण (Archaeological & Iconographic Analysis)

मिरतुर का यह स्थल बहु-देवता उपासना का केंद्र रहा है। यहाँ से प्राप्त मुख्य मूर्तियाँ उत्कृष्ट शिल्प कौशल का उदाहरण हैं:

1. त्रि-देव अवधारणा: चबूतरे पर भगवान ब्रह्मा, भगवान विष्णु और भगवान महेश (शिव) की प्राचीन विग्रह मूर्तियाँ एक साथ मिलती हैं, जो बस्तर की धार्मिक सहिष्णुता को दर्शाती हैं।
2. ब्रह्मा विग्रह: यहाँ स्थापित ब्रह्मा जी की मूर्ति में उनके मुख और चतुर्भुज रूप की पारंपरिक नक्काशी देखी जा सकती है।

3. अन्य सहायक विग्रह: परिसर के समीप ही सूर्य देव की प्राचीन प्रतिमा और एक नवनिर्मित गर्भगृह में प्राचीन शिवलिंग की स्थापना की गई है।

4.1 पुरातात्विक, स्थापत्य एवं मूर्तिकला का विस्तृत विश्लेषण (Detailed Archaeological & Iconographic Analysis)

मिरतुर (बीजापुर) का यह प्राचीन देव स्थल मध्यकालीन बस्तर की मूर्तिकला, क्षेत्रीय स्थापत्य और समकालीन धार्मिक चेतना का एक उत्कृष्ट पुरातात्विक दस्तावेज़ है। यद्यपि समय की मार और समुचित संरक्षण के अभाव में मूल मंदिर का शिखर, मंडप और अंतराल पूरी तरह से ध्वस्त हो चुके हैं, किंतु यहाँ प्राप्त प्रतिमाएँ और उनके भग्नावशेष तत्कालीन शिल्प-कौशल की उच्च पराकाष्ठा को प्रमाणित करते हैं।

4.2. मंदिर स्थापत्य की शैली (Architectural Style)

तकनीकी दृष्टि से, मिरतुर के मंदिर के अवशेष नागर शैली (Nagara Style) के क्षेत्रीय रूपांतरण को दर्शाते हैं, जिस पर दक्षिण भारतीय द्रविड़ स्थापत्य (Dravidian Architecture) का आंशिक प्रभाव दिखाई देता है। बस्तर के इतिहास में इसे 'छिंदक नागवंशीय स्थापत्य शैली' के रूप में वर्गीकृत किया जाता है।

- **सामग्री:** मंदिर के निर्माण में स्थानीय स्तर पर उपलब्ध बलुआ पत्थर (Sandstone) और ग्रेनाइट का उपयोग किया गया है।
- **अधिष्ठान (Plinth):** वर्तमान में जो चबूतरा दिखाई देता है, वह मूल मंदिर के जगती या अधिष्ठान के मलबे पर ही निर्मित है। यहाँ बिखरे हुए नक्काशीदार पत्थर, आमलक (Amalaka) के टुकड़े और खंडित स्तंभ इस बात के साक्ष्य हैं कि यहाँ एक समय मंडप और गर्भगृह युक्त एक भव्य मंदिर संरचना विद्यमान थी।

4.3. ब्रह्मा विग्रह का लक्षणशास्त्रीय अध्ययन (Iconography of Lord Brahma)

पुष्कर (राजस्थान) और खजुराहो (मध्य प्रदेश) के बाद, भारत में ब्रह्मा जी की ऐसी प्राचीन मूर्तियाँ अत्यंत विरल हैं। मिरतुर की ब्रह्मा प्रतिमा का शास्त्रीय विश्लेषण निम्नलिखित विशेषताओं को उजागर करता है:

- **चतुर्मुख स्वरूप:** प्रतिमा में ब्रह्मा जी के मुखों को त्रि-आयामी (Three-dimensional) रूप में उकेरा गया है। सम्मुख और पार्श्व के मुख स्पष्ट हैं, जो उनकी सर्वव्यापकता और वेदों के ज्ञाता स्वरूप को दर्शाते हैं। मुखमंडल पर सौम्य, ध्यानमग्न और आध्यात्मिक आभा (Serene meditative expression) परिलक्षित होती है।
- **चतुर्भुज विन्यास:** यद्यपि प्रतिमा के कुछ हिस्से आंशिक रूप से खंडित हैं, फिर भी शास्त्रीय परंपरा के अनुसार उनके हाथों में अक्षमाला (Spiritual Rosary), कमंडल (Water Pot), और सुवा (Sacrificial ladle) के लक्षण दिखाई देते हैं, जो सृष्टि सृजन और यज्ञीय अनुष्ठान के प्रतीक हैं।

- **जटा मुकुट एवं आभूषण:** प्रतिमा के सिर पर सुसज्जित 'जटा मुकुट' उत्कीर्ण है। कानों में कुंडल, गले में एकावली (हंसली जैसी माला) और यज्ञोपवीत (Janeu) की सूक्ष्म नक्काशी छिंदक नागवंशीय काल की उच्च धातु एवं पाषाण शिल्प कला को सिद्ध करती है।

(प्राचीन मिरतुर त्रिमूर्ति परिसर)

(ब्रह्मा विग्रह)
(सृष्टिकर्ता)

(विष्णु विग्रह)
(स्थितिकर्ता)

(महेश/शिवलिंग)
(संहारकर्ता)

4.4. 'त्रिमूर्ति' और धार्मिक समन्वय की अवधारणा (Syncretism of Trimurti)

मिरतुर स्थल की सबसे बड़ी पुरातात्विक विशेषता यह है कि यहाँ ब्रह्मा, विष्णु और महेश (शिव) तीनों संप्रदायों के विग्रह एक ही परिसर में सह-अस्तित्व में मिलते हैं:

1. **विष्णु प्रतिमा:** यहाँ से प्राप्त भगवान विष्णु की प्रतिमा में उनके पारंपरिक आयुध (शंख, चक्र, गदा, पद्म) के अवशेष मिलते हैं। यह स्थान वैष्णव धर्म के प्रभाव को दर्शाता है।
2. **शिव एवं सूर्य प्रतीक:** परिसर में स्थापित प्राचीन शिवलिंग और सूर्य देव की प्रतिमा यह प्रमाणित करती है कि यह स्थल केवल किसी एक संप्रदाय का नहीं, बल्कि 'पंचदेव' या 'त्रिमूर्ति' उपासना का एक मुख्य क्षेत्रीय केंद्र था। बस्तर के राजा स्वयं को 'मणिक्यदेवी' के भक्त और परम माहेश्वर कहते थे, किंतु उन्होंने ब्रह्मा और विष्णु की उपासना को भी समान संरक्षण दिया।

4.5. भू-गतिका एवं संरक्षण की स्थिति (State of Conservation)

- **क्षरण के कारण:** बस्तर की आर्द्र जलवायु, सघन वानस्पतिक विकास और सदियों की उपेक्षा के कारण पत्थरों पर 'लिवरवर्ट्स' और काई (Lichen) की परतें जम चुकी हैं, जिससे बारीक नक्काशी का रासायनिक क्षरण (Chemical Weathering) हो रहा है।
- **पुरातात्विक महत्ता:** बारसूर के जुड़वां गणेश और मामा-भांजा मंदिर के समकालीन होने के कारण, मिरतुर का यह पुरातात्विक स्थल छत्तीसगढ़ सरकार के संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग द्वारा निरंतर प्रलेखीकरण (Documentation) की प्रक्रिया में है।

5. 'दूध पात्र' एवं अभिषेक अनुष्ठान परंपरा (The 'Doodh Patra' & Rituals)

स्थानीय लोक परंपरा और शोध साक्ष्यों के अनुसार, मिरतुर ब्रह्मा मंदिर में 'दूध पात्र' (या दुग्धाभिषेक पात्र) का विशेष धार्मिक महत्व है:

- **अवधारणा:** प्राचीन काल में बस्तर के आदिवासी और पारंपरिक समाजों में देवताओं को शांत करने और सुख-समृद्धि की कामना के लिए प्रकृत जन्य पदार्थों (जैसे गाय का शुद्ध दूध, जल) का अर्पण किया जाता था।
- **दूध पात्र की विशेषता:** मंदिर के विग्रहों के समक्ष या जलाधारी (अरघा) के रूप में एक विशेष 'पात्र' की व्यवस्था है, जहाँ श्रद्धालु दूध अर्पित करते हैं। ऐसी मान्यता है कि यहाँ श्रद्धापूर्वक दुग्धाभिषेक करने या दूध का अर्पण करने से क्षेत्र में अकाल नहीं पड़ता और कृषि फसलें उन्नत होती हैं। यह परंपरा बस्तर की जनजातीय संस्कृति (जैसे डोकर देव या

स्थानीय देवताओं की पूजा) और सनातन वैदिक पद्धति का एक सुंदर सम्मिश्रण प्रस्तुत करती है।

5.1. आधुनिक पुनरुद्धार एवं डॉ. राम विजय शर्मा का ऐतिहासिक योगदान (Modern Revival & Institutional Efforts)

मिरतुर का यह पुरातात्विक स्थल सदियों तक घने जंगलों, भौगोलिक विषमताओं और उचित प्रशासनिक ध्यान के अभाव में गुमनामी के अंधेरे में खोया हुआ था। मूल मध्यकालीन मंदिर पूरी तरह धराशायी हो चुका था और इसकी अनमोल मूर्तियाँ मलबे तथा झाड़ियों के बीच बिखरी पड़ी थीं।

5.2. पुरावशेषों की खोज और प्रलेखीकरण (Discovery and Documentation)

भैरमगढ़ तहसील में अपने कार्यकाल के दौरान, तत्कालीन तहसीलदार और सांस्कृतिक शोधकर्ता डॉ. राम विजय शर्मा ने इस अंचल की पुरातात्विक संपदा को सहेजने का बीड़ा उठाया।

- **खोज अभियान:** उन्होंने स्थानीय भौगोलिक विन्यासों का सघन अध्ययन किया और घने वनों के बीच दबे इस ऐतिहासिक मलबे से भगवान ब्रह्मा, भगवान विष्णु, महेश (शिव) और सूर्य देव की प्राचीन विग्रह मूर्तियों को खोज निकाला।
- **जन-भागीदारी (Community Mobilization):** डॉ. शर्मा ने इस कार्य में केवल प्रशासनिक तंत्र का उपयोग नहीं किया, बल्कि स्थानीय जनजातीय ग्रामीणों और ग्रामवासियों का विश्वास जीतकर उनका सक्रिय सहयोग लिया।

5.3. चबूतरा निर्माण एवं मूर्तियों की सुरक्षित स्थापना (Restoration & Conservation)

मूर्तियों की संवेदनशीलता और सुरक्षा को देखते हुए डॉ. राम विजय शर्मा ने एक त्वरित संरक्षण मॉडल अपनाया:

- **बरगद वृक्ष के नीचे पुनर्स्थापना:** प्राचीन प्रतिमाओं को और अधिक क्षतिग्रस्त होने से बचाने के लिए उन्होंने ग्रामवासियों की मदद से एक विशाल बरगद के वृक्ष के नीचे एक सुदृढ़ चबूतरा (Platform) निर्मित करवाया।
- **अभिषेक व्यवस्था का सुदृढ़ीकरण:** बिखरे पड़े 'दूध पात्र' और अरघा (जलाधारी) को शास्त्रोक्त विधि से व्यवस्थित किया गया, जिससे स्थानीय लोगों की आस्था को पुनः एक जीवंत केंद्र मिला और सदियों पुरानी अनुष्ठानिक परंपरा को निरंतरता प्राप्त हुई।

5.4. पर्यटन और अकादमिक पटल पर रेखांकन (Promoting Regional Heritage)

डॉ. शर्मा के इस युगांतरकारी प्रयास के कारण ही यह सुदूर अंचल छत्तीसगढ़ पर्यटन और राष्ट्रीय पुरातत्व मानचित्र पर अपनी पहचान बना सका। इनके द्वारा किए गए प्राथमिक प्रलेखीकरण (Documentation) ने आगे चलकर राज्य के संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के लिए विस्तृत सर्वेक्षण का मार्ग प्रशस्त किया।

6. मिरतुर ब्रह्मा देव मेला: अंतर-राज्यीय सांस्कृतिक एवं जनजातीय समन्वय (Mirutur Brahma Fair: Inter&State Cultural & Tribal Confluence)

मिरतुर में स्थापित छत्तीसगढ़ के इस एकमात्र प्राचीन ब्रह्मा मंदिर परिसर में प्रतिवर्ष एक विशाल और भव्य मेले का आयोजन किया जाता है। यह मेला बस्तर संभाग के सबसे अनूठे सांस्कृतिक आयोजनों में से एक माना जाता है, जहाँ सनातन वैदिक परंपरा और बस्तर की मूल जनजातीय संस्कृति का विरल मिलन देखने को मिलता है।

6.1. भौगोलिक एवं अंतर-राज्यीय सहभागिता (Inter-State Gathering)

मिरतुर मेले की सबसे बड़ी विशिष्टता इसका बहु-सांस्कृतिक और अंतर-राज्यीय स्वरूप है। इस मेले में केवल छत्तीसगढ़ ही नहीं, बल्कि पड़ोसी राज्यों से भी बड़ी संख्या में श्रद्धालु और जनजातीय समुदाय पहुँचते हैं:

- **श्रद्धालुओं का आगमन:** मेले के दौरान तेलंगाना, ओडिशा, आंध्र प्रदेश और संपूर्ण छत्तीसगढ़ के कोने-कोने से लाखों की संख्या में श्रद्धालु ब्रह्मदेव और त्रिमूर्ति के दर्शन हेतु मिरतुर ग्राम में एकत्रित होते हैं।
- **सांस्कृतिक आदान-प्रदान:** विभिन्न राज्यों की सीमाओं से जुड़े होने के कारण यहाँ विविध बोलियों (गोंडी, हल्बी, तेलगु, उड़िया) और संस्कृतियों का एक अद्भुत ताना-बाना निर्मित होता है।

6.2. मेले का स्वरूप और पारंपरिक 'मड़ई' का प्रभाव (Tribal Madai Tradition)

बस्तर की पारंपरिक 'मड़ई' व्यवस्था की तरह ही मिरतुर के इस मेले को भी पूर्णतः जनजातीय रीति-रिवाजों के अनुसार संचालित किया जाता है:

- **देव-आवाहन एवं परिक्रमा:** मेले के मुख्य दिनों में आस-पास के गांवों के पारंपरिक 'आंगा देव', 'लाट देव' और अन्य स्थानीय देवी-देवताओं के विग्रहों (डोली) को ग्रामीण अपने कंधों पर उठाकर मिरतुर मंदिर परिसर लाते हैं। ब्रह्मा जी की मुख्य वेदी के चारों ओर इन देव-विग्रहों की परिक्रमा कराई जाती है।
- **पारंपरिक लोक नृत्य:** इस सांस्कृतिक उत्सव के दौरान रात्रिकालीन समय में गोंडी और हल्बी लोक नृत्यों (जैसे रेला नृत्य, ककसार और डंडारी) का आयोजन होता है, जिसमें स्त्री और पुरुष अपने पारंपरिक वेशभूषा और वाद्य यंत्रों (जैसे तोड़ी, मंदार) के साथ सम्मिलित होते हैं।

6.3. 'दूध पात्र' अनुष्ठान और मेले का अंतर्संबंध (Ritualistic Context)

मेले के दौरान मंदिर के विशेष 'दूध पात्र' (अभिषेक स्थल) की महत्ता और अधिक बढ़ जाती है। दूर-दराज से आए ग्रामीण अपनी मन्तें पूरी होने पर तांबे या पीतल के पात्रों में शुद्ध गाय का दूध लेकर आते हैं और ब्रह्मा जी का दुग्धाभिषेक करते हैं। स्थानीय मान्यता के अनुसार, मेले के दौरान किया गया यह दुग्धाभिषेक अंचल को प्राकृतिक आपदाओं, बीमारियों और अकाल से सुरक्षित रखता है।

6.4. सामाजिक-आर्थिक महत्व (Socio&Economic Impact)

अकादमिक दृष्टि से यह मेला सुदूर बीजापुर जिले के आर्थिक ताने-बाने को भी सुदृढ़ करता है। मेले में पारंपरिक जनजातीय हस्तशिल्प, बांस की वस्तुएं, मिट्टी के बर्तन और स्थानीय कृषि उपों का बड़े पैमाने पर विनिमय होता है, जिससे क्षेत्र के छोटे कारीगरों और व्यापारियों को एक बड़ा आर्थिक मंच प्राप्त होता है।

6.5. केंद्रीय आश्वासन और पुरातात्विक महत्व (Union Ministry's Assurance)

- **राष्ट्रीय स्तर पर पहचान:** डॉ. राम विजय शर्मा की खोज और स्थानीय मीडिया कवरेज के बाद जब यह मामला केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय तक पहुँचा, तब मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने बस्तर के इस इकलौते प्राचीन ब्रह्मा मंदिर के संरक्षण में गहरी रुचि दिखाई।
- **भव्य मंदिर निर्माण का आश्वासन:** उन्होंने इस ऐतिहासिक धरोहर को सहेजने, मूर्तियों को प्राकृतिक क्षरण से बचाने और श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए वहाँ एक विशाल व भव्य मंदिर परिसर विकसित करने का भरोसा दिया था।
- **सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और पर्यटन:** इस आश्वासन का मुख्य उद्देश्य मिरतुर (बीजापुर) को देश के प्रमुख धार्मिक-सांस्कृतिक मानचित्र से जोड़ना था, जिससे स्थानीय जनजातीय रोजगार और बस्तर पर्यटन (Bastar Tourism) को बढ़ावा मिल सके।

6.6. अध्याय: पुरातात्विक संरक्षण में केंद्र सरकार एवं नीतिगत प्रयास

“मिरतुर पुरास्थल का महत्व केवल क्षेत्रीय लोक-आस्था तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसे राष्ट्रीय स्तर पर भी संज्ञान में लिया गया। भारत सरकार के तत्कालीन केंद्रीय संस्कृति राज्य मंत्री श्री अर्जुन राम मेघवाल ने इस ऐतिहासिक स्थल के पुरातात्विक महत्व को स्वीकार करते हुए यहाँ एक भव्य मंदिर निर्माण और पुरातात्विक कंक्रीट शेड बनाने का आश्वासन दिया।

यह नीतिगत आश्वासन इस बात को प्रमाणित करता है कि डॉ. राम विजय शर्मा के प्रशासनिक अन्वेषण ने न केवल एक खोई हुई विरासत को तलाशा, बल्कि उसे देश की मुख्यधारा के नीति-निर्धारकों तक पहुँचाने में भी सफलता प्राप्त की। केंद्र सरकार की इस पहल से आने वाले समय में मिरतुर को ‘केंद्रीय पुरातात्विक संरक्षण’ (ASI Protection) मिलने की राह आसान होगी।”

6.7. सांस्कृतिक आयोजन एवं लोक मेला (Cultural Events & Annual Fair)

- **वार्षिक मेला:** मिरतुर के इस ब्रह्मा मंदिर परिसर में वर्ष में एक बार भव्य पारंपरिक मेले का आयोजन किया जाता है।
- **जनजातीय सहभागिता:** इस मेले में बीजापुर, दंतेवाड़ा और बस्तर के विभिन्न अंचलों से हजारों की संख्या में ग्रामीण और विशेषकर जनजातीय समाज के लोग अपने पारंपरिक वाद्य यंत्रों के साथ पहुँचते हैं।
- **धार्मिक समन्वय:** मेले के दौरान ब्रह्मा जी के दर्शन के साथ-साथ पारंपरिक मड़ई और लोक नृत्यों का आयोजन होता है, जो इस ऐतिहासिक स्थल को जीवंत बनाए रखता है।

7. पहुँच मार्ग एवं पर्यटन मार्गदर्शिका (Access Route Guide)

मिरतुर पहुँचने के लिए निम्नलिखित परिवहन मार्गों का उपयोग किया जा सकता है:

परिवहन माध्यम	विवरण व मार्ग
वायु मार्ग (Airways)	निकटतम हवाई अड्डा जगदलपुर (बस्तर) या रायपुर (स्वामी विवेकानंद हवाई अड्डा) है, जहाँ से सड़क मार्ग द्वारा बीजापुर की ओर बढ़ा जाता है।
रेल मार्ग (Railways)	निकटतम मुख्य रेलवे स्टेशन दंतेवाड़ा या जगदलपुर है।
सड़क मार्ग (Roadways) – मुख्य रूट	रायपुर/जगदलपुर गीदम राष्ट्रीय राजमार्ग 63 पर स्थित नेलसनार ग्राम नेलसनार से आंतरिक पक्की सड़क द्वारा 16 किमी की दूरी तय कर मिरतुर ग्राम पहुँचे। यहाँ दोपहिया और चारपहिया वाहनों से आसानी से पहुँचा जा सकता है।

8. प्रमुख मीडिया हाउस की कवरेज एवं हेडलाइंस

- **नई दुनिया (Nai Dunia): (2021)** समाचार पत्र ने अपने विस्तृत प्रादेशिक खंड में “मिरतुर में है प्रदेश का एकमात्र ब्रह्मा जी का मंदिर” शीर्षक से कवरेज प्रकाशित की थी। रिपोर्ट में विशेष तौर पर उल्लेख किया गया कि भैरमगढ़ के तत्कालीन तहसीलदार राम विजय शर्मा ने स्थानीय ग्रामीणों को प्रेरित कर मलबे में तब्दील हो चुके मंदिर से मूर्तियों को खोज निकाला।
- **एबीपी लाइव (ABP Live): (2022)** डिजिटल और मुख्यधारा मीडिया नेटवर्क ने “छत्तीसगढ़ के इस जिले में भगवान ब्रह्मा का इकलौता प्राचीन मंदिर...” हेडलाइन के तहत इसकी ग्राउंड रिपोर्ट दिखाई। एबीपी की रिपोर्ट में डॉ. शर्मा और ग्रामीणों के सामूहिक प्रयास से बरगद पेड़ के नीचे मूर्तियों (ब्रह्मा, विष्णु, महेश, सूर्य देव) की पुनर्स्थापना और वार्षिक मेले के प्रारंभ होने को प्रमुखता से रेखांकित किया गया।
- **स्थानीय बस्तर और छत्तीसगढ़ के डिजिटल पोर्टल्स: (2021–2022)** कई क्षेत्रीय वेब न्यूज़ चैनलों ने डॉ. राम विजय शर्मा के इस ‘एथनो-आर्केलॉजिकल’ (प्रशासनिक पुरातात्विक) प्रयास को “गुमनाम धरोहर की खोज” के रूप में प्रसारित किया।

8.1. मीडिया कवरेज के मुख्य बिंदु (Core Highlights Covered)

1. **अन्वेषण गाथा:** कैसे घने नक्सल प्रभावित और दुर्गम अंचल मिरतुर में एक प्रशासनिक अधिकारी (तहसीलदार) ने अपनी ड्यूटी के साथ-साथ बस्तर के इतिहास को बचाने में रुचि दिखाई।
2. **दुर्लभता का नैरेटिव:** मीडिया ने भारत में केवल पुष्कर मंदिर की जनश्रुति के बीच, बस्तर के मिरतुर को “छत्तीसगढ़ का पुष्कर” या “राज्य का एकमात्र सक्रिय ब्रह्मा स्थल” बताकर राष्ट्रीय स्तर पर ध्यान आकर्षित किया।
3. **‘दूध पात्र’ लोक परंपरा:** स्थानीय आदिवासियों की ‘दूध पात्र’ से अभिषेक करने की सुप्त लोक-परंपरा को इस खोज के बाद दोबारा कैसे मीडिया में पहचान मिली, इसे सांस्कृतिक रिपोर्टाज के रूप में छापा गया।

9. निष्कर्ष (Conclusion)

मिरतुर (बीजापुर) का ब्रह्मा मंदिर केवल ईट-पत्थरों का ढांचा मात्र नहीं है, बल्कि यह संपूर्ण छत्तीसगढ़ राज्य का एक अद्वितीय पुरातात्विक रत्न है। यहाँ की ‘दूध पात्र’ परंपरा और त्रिदेवों की मूर्तियाँ यह सिद्ध करती हैं कि प्राचीन काल में बस्तर का यह सुदूर अंचल उच्च स्तरीय मूर्तिकला और धार्मिक चेतना का केंद्र था। इस स्थल का गहन पुरातात्विक सर्वेक्षण और संरक्षण भारतीय इतिहास के कई नए आयामों को उजागर कर सकता है।

10. प्रामाणिक अकादमिक एवं पुरातात्विक संदर्भ सूची (References List)

- मिश्र, रमेश नाथ. (2014). दक्षिण कोसल और बस्तर का इतिहास एवं पुरातत्व. वैभव प्रकाशन, रायपुर.
- जोशी, जे. पी., एवं सिंह, ए. के. (2008). छत्तीसगढ़ के स्मारक और मूर्तियाँ: एक पुरातात्विक सर्वेक्षण. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI), नई दिल्ली.
- मिश्र, राहुल कुमार. (2019). बस्तर के छिंदक नागवंशीय कालीन मंदिरों का शिल्प स्थापत्य: बारसूर और भैरमगढ़ अंचल के विशेष संदर्भ में. शोध संचयन (मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान की अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका), 10 (2), 45–52.
- छत्तीसगढ़ शासन (संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग). (2021). बीजापुर जिले के संरक्षित एवं असंरक्षित स्मारकों की पुरातात्विक विवरणी. शासकीय मुद्रणालय, रायपुर.
- झा, अमित. (2016). बस्तर की जनजातीय संस्कृति और लोक विलोपन. मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल.
- शुक्ला, एच. एल. (1988). History of the People of Bastar: An Anthropological Interpretation. इतिहास प्रकाशन, दिल्ली. (इस ग्रंथ में बस्तर के प्राचीन देव-स्थलों और लोक अनुष्ठानों जैसे दूध-पात्र/अभिषेक का उल्लेख है).
- डोगरा, पी. के. (2011). Ancient Temples of Central India and Their Iconography. न्यू एरा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली.



EARN YOUR MBA

WWW.IIMPS.IN



Accreditation & Ranking



UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

☎ 011-41005174

RESEARCH
GATEWAY

STOP PLAGIARISM



Arogyam Ayurveda
Holistic Healing through herbs



AROGYAM
ONLINE

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

परिवर्तन

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD



BLUE

Calms your Child's
Mind & Body

YELLOW

Promotes Concentration,
Stimulates the Memory

PINK

Evokes Empathy,
makes your Child Calm

RED

Excites and energizes
your Child's body

GREEN

Improves Reading speed
and Comprehension

www.parivartan4u.com



परिवर्तन

Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY**

ISSN – 2250 – 1959 (O) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
COMMERCE, ARTS AND SCIENCE**

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES**

ISSN 2277 – 9809 (O) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE
ENGINEERING AND TECHNOLOGY**

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM



**INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION**

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM



**JOURNAL OF LEGAL STUDIES, POLITICS
AND ECONOMICS RESEARCH**

WWW.JLPER.COM

JLPE